शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 फरवरी 2014

गोविन्द मिश्र की कहानियों में स्त्री-अस्मिता

सरिता देवी (शोधार्थी हिंदी)
वनस्थली विद्यापीठ
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

गोविन्द मिश्र की कहानी चेतना प्रारंभ में तत्कालीन स्थितियों के प्रति अपने समकालीन कहानीकारों के समान ही विद्रोह व नकार की मुद्रा और यथास्थितियों के चित्रण में उदघाटित होती है। गोविन्द मिश्र की कहानियाँ तर्क व विचार प्रेरित भूमिकाओं का अतिक्रमण करती हुई विद्रोह व नकार की सतही भूमिका से ऊपर उठती हुई, व्यक्तित्व का विघटन करने वाली शक्तियों के विरूद्ध मानवीय ऊर्जा की स्थापना करती है। गोविन्द मिश्र कहते हैं "हमें यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि कहानीकार के कोई ठोस लक्ष्य नहीं हो सकते... लेकिन सूक्ष्म लक्ष्य भी कम अहम् नहीं है, क्योंकि ये जीवन को विस्तार देते हैं, उसे भौतिक तक ही सीमित नहीं रह जाने देते।"1

प्रस्तावना

गोविन्द मिश्र ने अपनी कहानियों में नारी की स्थिति का पूर्ण रूप से विवेचन किया है। नारी मात्र एक शरीर या वस्तु नहीं है, वह स्वतंत्र निर्णय लेने वाली साहसी और एक मस्तिष्क भी है। यद्यपि उसे अपने पुराने सड़े-गले संस्कारों के वजूद की पर्त दर पर्त छीलने में बहुत समय लगा लेकिन अपनी पहचान उसने स्वयं बनाई है। पिछले 100 वर्षों के इतिहास में हिन्दी कहानी ने अपनी विशेष अस्मिता स्थापित की है। समय की गूंज और नवीन चुनौतियों का सामना करने का साहस गोविन्द मिश्र की कहानियों में दिखाई देता है। एक ओर नारी का अस्तित्व वैयक्तिक और सामाजिक चरित्र पाश्चात्य संस्कृति, नवजागरण, राजनीति तथा बदलते जीवन मूल्यों से प्रभावित हुआ है। तो दूसरी ओर नारी भूमण्डलीकरण स्त्रीवाद, पूंजीवाद पितृसत्तात्मक ताकतों के बीच अपनी राह खोज रही है। युग के अंतर्विरोधों के बीच अपनी अस्मिता बचाने के लिए उसने अपनी चुप्पी तोड़ी है। इसके लिए आवश्यक है कि वह पहले अपने आपको सामान्य मानवी समझे। संवैधानिक रूप से वह भले ही स्वतंत्र हो गई है परन्तु यथार्थ के धरातल पर वह पूर्ण स्वतंत्र नहीं है। वैचारिक मानसिक स्तर पर भी उसे इस स्वतंत्रता से मुक्त होना होगा। इस प्रकार गोविन्द मिश्र ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने नारी अस्मिता को उसके जीवन के संघर्षों, समस्याओं, हृदय की सूक्ष्म संवेदनाओं के रहस्योद्घाटन तथा उसके चरित्र के बहुआयामी पक्षों को अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया है।

गोविन्द मिश्र की कहानियों में स्त्री अस्मिता

गोविन्द मिश्र की कहानियों में स्त्री अस्मिता को पूर्ण रूप से दर्शाया है 'पगला बाबा' कहानी में गोविन्द मिश्र जी ने पारिवारिक परिवेश को दर्शाया है। इसमें स्त्री जीवन की विभिन्न पहलुओं का विवेचन किया है। इस कहानी में आनंद और सुखी दाम्पत्य जीवन में परस्त्री के आगमन पर बौखलाती, क्रुद्ध होती, आक्रोश करती और सौत को

मार-पीटकर अपमानित करने की इच्छा से प्रेरित एक ब्याहता स्त्री का यथार्थ और सूक्ष्म अंकन इसमें किया गया है। इस प्रकार गोविन्द मिश्र ने इस कहानी में स्त्री जीवन के संघर्षशील व्यक्तित्व का चित्रण किया है। 'खुद के खिलाफ' कहानी की अत्यन्त सशक्त कथा है जिसमें विमला प्रेम की असफलता में किस हद तक नीचे गिरती है यह दर्शाया गया है, किन्तु लेखक उन स्थितियों को भी सामने रखता है जिनके कारण विमला अपनी अस्मिता को बनाए रखती है और सहानुभूति का पात्र बनती है। अतः इस कहानी में लेखक विवाह और प्रेम के परम्परागत प्रस्थापित नैतिक मानों को खुलकर चुनौती देता है। उन मानों को जो पुरूष ने अपनी ही दृष्टि में बनाए हैं कहानी की विमला का यह सवाल-"तुम्हें औरत में कोमलता चाहिए.... यह चाहिए, वह चाहिए। कभी यह भी सोचा है कि औरतों को भी तुममें कुछ चाहिए?"2 अतः इस कहानी में गोविन्द मिश्र ने स्त्री संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि गोविन्द मिश्र ने नारी को सशक्त सतर्क और स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। एक स्थान पर उन्होंने लिखा है कि "लोग अपनी पत्नियों को जीव कम चीजें ज्यादा समझते हैं।"3

निष्कर्ष

गोविन्द मिश्र ने अपने पराए का खेमा छोड़कर नारी जीवन को बहते झरने की तरह चित्रित किया है नारी केवल इस्तेमाल करने की चीज नहीं बल्कि अपनी अस्मिता को सशक्त बनाने वाली है लेखक की नजर में नारी का आत्म सम्मान उसकी स्वतंत्रता और महत्वाकांक्षा बहुत महत्व रखती है। उनके नारी चरित्र अपनी सीमाओं में रहकर स्वतंत्रता की अलख जगाते हैं। अतः गोविन्द मिश्र की कहानियों में नारी अस्मिता एवं उसके संपूर्ण पहलुओं को प्रदर्शित करना ही प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है।

संदर्भ

1. गोविन्द मिश्र,चन्द्रकांत बंदिवाडेकर(सं.), सृजन के आयाम, पृ.सं.-223
2. डॉ.पुष्पपाल सिंह, खुद के खिलाफ, पृ.सं.-260
3. गोविन्द मिश्र, वह अपना चेहरा, पृ.सं.-59
4. गोविन्द मिश्र, उर्मिला शिरीष (सं.), सृजन यात्रा